

ASMA ARCHIVES

1.775

MS. A. 1. 775

ASMA ARCHIVES

1.775

MS. A. 1.775

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ श्रुतः कृत्यः ॥ पुष्करे नवसंस्थितं
उभयं वनं सितां ॥ नृणां च इह स्वनिर्हं शी सर्वं मंगलदायिनी
॥ विनयत्याग नृणां यशु क काली सु नग्यनी ॥ सर्व इह स्वा
यम्भार्य दृढया दृढ म अगं ॥ वाक् मू कुरु उक्ता यशु क क
ली उसीद म ॥ सु म ल मंगल यशु क कालि म ति न ना छि वा स

स सत्यशामि बु न म ४ स्वा हा ॥ नृ ति ना छि वा स स वि ल य ॥ सु ॥
नृ ति वा सा न न य म ॥ सु वि न मंगल यशु क कालि वा सा न
नृ उ ई ध न य म य मी द र सु न म ४ स्वा हा ॥ नृ ति वा सा न नृ उ
ई य नि ध र्य ॥ सु यो य ॥ नृ ति पा दो ष का त्या न ४ सु ई ई ॥ नृ ति
ह मी ष का त्या न ४ सु यो य ॥ नृ ति मूर् ख ष का त्या न ॥ सु ॥ सु

तिष्ठिषा वं न्या न ४॥ ॐ ॥ निति विरु मादा या ॥ ज तं द त्या ॥ ॐ ॥
तिष्ठिषा विरु मादा या ॥ ॐ ॥ निति विरु मादा या ॥ ज तं द त्या ॥ ॐ ॥
दार्म्य लया ॥ क द य व स वां ला विरु मादा या ॥ न ४॥ ॐ ॥
विद्या क्रिया सन ॥ विद्या क्रिया सन ॥ विद्या क्रिया सन ॥ विद्या क्रिया सन ॥
वा उ म मू ली कि न र्थं य न वि क र्मा ॥ कुं क न वी न म म न यी भ

सन ॥ यार कां य र्ज या मि न म ४॥ ॐ ॥ स न र्थं य र्ज या न ४॥ ॐ ॥
सिं ग या नि मू डी द्र द र्थ ॥ न सि न्ना स न उ द द मू ख न या वा
प वि न्म ॥ ॐ ॥ सिं हि म ग न ग लो म य न म ४॥ ॐ ॥ नि वा दि
गु रू न्म न म ४॥ न ल्म गू रू न्म न म ४॥ ॐ ॥ गु रू न्म न म ४॥
न ग ल य न य न म ४॥ इ द म य न म ४॥ ॐ ॥ क र्मा य लो प

नमः॥ सैः सनस्यत्ये नमः॥ यं य न मात्मन नमः॥ गुर्
ब्रह्म गुर्विष्णु गुर्दवा महान्य नमः॥ गुर्वनवय नवक
नस्येष्टी गुर्वन नमः॥ नृग्य नतिमिनीधस्य इनीशन
गलाकया॥ ब्रह्म नृत्मीतिगैथ न नस्येष्टी गुर्वन नमः॥
उं ह्रीं यगुर्हं ह॥ नृगिक नृत्मीधन गालुग्ययूवस्य

यं व्यामद्वलुते देवि हितवदुनदा ४ पादयुक्ता विवर्जिता ललायकपद्मकिलितशङ्खिकलाभि
इत्येतावदागा ॥ नृसिंहाक्षरवितालिखितवनकनीशुद्धापद्मसंस्मृताकक्षामुक्ता

स्तुतृदिष्वर्थविक्षयात् ॥ मातृकायास्तुतृदिष्वर्थविक्षयात् ॥
 ॥ मूलन्यासायामुत्तमविक्षयात् ॥ ॥ इति तत्तु ॥
 सुकनकलनित्यात् ॥ इति मूलकनकलनित्यात् ॥
 नवविधं नमः ॥ इति स्वर्गनीचयायागथा ॥ इति ॥
 नित्यं दृष्टुं मूलकसत्ययनमानन्दानन्दयनवक्रनिर्वाणगुणवत्

[illegible]

काली गणिकी ॥ पादया ॥ कुंकीतकं ॥ बाह्या ॥ यनव
क्रनिर्वाद्यगुक्तकालीयसाद्वनसुनैवउर्वरु
लयास्यैरुयविनियोग ॥ सर्वरुगिकी ॥
पत्रवक्रनिर्वाद्यगुक्तकाल्यैरुगुक्तानम ॥ नृनि
त्यरुकिगिकी ॥ यनवक्रनिर्वाद्यगुक्तकाल्यै

[illegible]

कनकलकनपृष्ठाक्षानम॥ॐविष्णुकनाल्येयनव
निर्वाणश्रीगुरुकाल्येकदयायनम॥ॐविष्णुमहा
कनाल्येयनवक्रनिर्वाणश्रीगुरुकाल्येगिनसखाहा॥
ॐविष्णुसिद्धिकनाल्येयनवक्रनिर्वाणश्रीगुरुकाल्येगि
त्वाथेवव॥ॐविष्णुमहासिद्धिकनाल्येयनवक्र

निर्वाणग्रीष्मकालेकववायहं॥वृंविद्वलुसिद्धिवा
मन्त्रोक्तकरालेयनवक्रनिर्वाणग्रीष्मकालेनवक्रया
येवोवद॥वृंविद्वलुमहात्मनयागित्येयनवक्रनि
निर्वाणग्रीष्मकालेनकायरु॥मूलमैयथा
किंनखाजयंसमर्थ॥गुक्तादिगुक्तामकीर्तयहाम

कुरंगय॥सिद्धिर्वलुमदविगुक्ताकालिगृहवम॥
तिशयंसमर्थ॥इंकींभुक्तावनवग्रीवाइकांनोमि
॥इंनकावनवग्रीवाइकांनोमि॥इंकींइंमिधवनव
ग्रीवाइकांनोमि॥इंकींवावनवग्रीवाइकांनोमि॥
इंनिलगुहवृद्धमकसत्यवनमाननाननयनवक्र

निर्वाणाय नमः श्रीगुरुभक्तिश्रीगुरु कालीश्रीपादकार्कानमः ॥
ॐ महानिर्वाणाय नमः श्रीगुरुभक्तिश्रीगुरु कालीश्रीपादकार्कानमः ॥
विद्यात्मकं गुरुं कल्याणमिदं कनिष्ठायां नमः ॥ ॐ
महानिर्वाणाय नमः श्रीगुरुभक्तिश्रीगुरु कालीश्रीपादकार्कानमः ॥
आकाशत्मकं गुरुं कल्याणमिदं त्रैलोक्याय नमः ॥

ॐ ॐ महानिर्वाणाय नमः श्रीगुरुभक्तिश्रीगुरु कालीश्रीपादकार्कानमः ॥
कालीश्रीपादकार्कानमः ॥ ॐ ॐ वाद्यात्मकं गुरुं कल्याणमिदं त्रैलोक्याय
नमः ॥ ॐ ॐ महानिर्वाणाय नमः श्रीगुरुभक्तिश्रीगुरु कालीश्रीपादकार्कानमः ॥
श्रीगुरुभक्तिश्रीगुरु कालीश्रीपादकार्कानमः ॥ ॐ ॐ त्रैलोक्याय नमः ॥
कल्याणमिदं त्रैलोक्याय नमः ॥ ॐ ॐ महानि

SHS ARCHIVES

1.775

SHS ARCHIVES

SH. ARCHIVES

1.775

Relig. Hist. Notes

वर्धनव नव सा स्म गुरु मूर्ति निर्वीर्यीष्ट क काल्ये
वृं वृं नृ मृ गाल्म के दी वं क वृ या मिष्टे नृ नामि कार्या
न म ४॥ वेष्टं या नि मृ द या गो वृ लं क ल्य या मिष्टु नृ मूर्ति
निर्वीर्यीष्ट क काल्ये वृं नृ मृ गाल्म मिष्टे नृ गाल्म न म ४॥ नृ
लि मृ द या वृ ल म्या न ४॥ कालि र म श कालि व उ वृ र्ध

रु ल वृ द ॥ या ग ल्म नि म श मा थ य क कालि न मा मु
न ॥ वृ ति मृ त्वा ॥ हं म ४ सा हं ॥ वृ ति नृ नृ यो र्म श या नः
॥ नृ नृ यो र्म नि स्र य नि व य ॥ दृ ४ सा य र्द ॥ वृ ति वि
मृ थ ॥ वृ ति र्म क व य न ४ क्रि या वि धि ४ ॥ ८ ॥

वैचन्द्र्यमंतलसंरुतसामवलीनृमृनयागिनिमलनिर्भा
यनिमदकवसनामलं (अधय रनिष्कासपरत्रमृनंवा
वयरवुंनम४स्वाहा॥ न्तिदिनकाठमहिर्मंश॥ सामामृ
नवलयरुं॥ न्तिदक्षिणवर्लनूवामावर्लन वि४दंनानृ
(अध॥ वृं नृमृतलजिनसनागत इलं श्रीनिष्काणयर

श्रीनिर्षिकुनृरुवुंनम४स्वाहा॥ न्तिजिक्कामलंनिष्का
स्य॥ वृंवा नृविस्नातामृनयागिनिर्ममृखातुर्मनम
लंजालयरुं (अधयरुं वृवलेवृदिनिष्काणयर
शुक्कालीशाननृभीनृवावयरविचुक्कलया (अध
निवृंनम४स्वाहा॥ न्तिनृगनमलंवाविष्मं (अध॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ अथ मन्त्रः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥
 य नमः ॥ गिरिवादिनाय नमः ॥ अमरलयाय नमः ॥ गुरु
 नमः ॥ गंगेय नमः ॥ इन्द्राय नमः ॥ कुरुवासाय
 नमः ॥ सप्तर्षये नमः ॥ सत्यं नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय
 नमः ॥ ॐ विद्याय नमः ॥ ॐ गिरिवासाय नमः ॥ ॐ

[illegible]

श्रीमदकाञ्चरीमहा मंत्रस्य परब्रह्मविष्णुशिवकवच
नीकं दशश्रीमन्निर्वाणश्रीगुरुकालीदेवता। ऊँ वीर्यं ।
श्रीमन्निर्वाणश्रीगुरुकालीशक्तिः । ऊँ कीलकं । खका
अनर्वाहिर्याकश्रीमत्त्वदिये नृनामयामृतगंग
जलस्नानविनियोगः । वृं । जै । वृं । ज । वृं । मध्या । वृं । ज

ना । वृं । कनि । वृं । कवतलव्याख्या नमः । ऊँ रुद्र
याय नमः । ऊँ गिनसमाह । ऊँ गिद्यायेव वद । ऊँ
कववायक । ऊँ नरुयायेवो वद । ऊँ ४ नृकायदः ॥
वराहयामृतकलशं स्वनर्तनी । धनर्तिगम् ४
वद ॥ त्रिकोणलिख्य जल । ऊँ मध्यासं लिखा । इ स

